सप्त व्यसन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

व्यसन का अर्थ है बुराई। बुराइयां अनगिनत हैं, किन्तु कुछ प्रमुख बुराइयां हैं, जिनके कारण मनुष्य पतन के गर्त में गिरता है। बुराइयों की सीख कुसंगत से प्राप्त होती है। नशा धीरे–धीर शुरू किया जाता है। धीरे–धीरे उसकी प्रवृत्ति बढ़ती जाती है और एक दिन ऐसा आता है कि हम नशे के बिना रह नहीं सकते। नशे के चंगुल में फंसकर जीवन बर्बाद हो जाता है। चोरी भी एक व्यसन है। इसको पहले अपने घर और विद्यालय से बच्चे सीखते हैं। पिता के जेब से पैसे निकालना, गेहूं, चावल इत्यादि को घर से ले जाकर बाजार में बेचना, विद्यालयों में पैन्सिल, कलम और किताबें चुराना चोरी की शुरूआत है। धीरे–धीरे यह प्रवृत्ति बढ़ती जाती है और एक दिन ऐसा आता है कि वह खुलेआम लूटपाट, डकैती, हत्या जैसे बड़े–बड़े कार्यों को अंजाम देने लगता है।

दूसरा व्यसन जुआ खेलना है। कुछ लोग परिश्रम न करके हराम की कमाई करना चाहते हैं। महाभारत में युधिष्ठर ने द्युतक्रीड़ा में पूरा राजपाट, अपनी पत्नि द्रोपदी और सभी भाईयों को दाव लगाकर हार गये। जुआ पूरी सम्पति को बर्बाद कर देता है। इसलिए यह एक बहुत बड़ी बुराई है। समाज में खुलेआम जुआ का खेल होता है। कुछ लोग उसमें जीतते हैं और कुछ लोग उसमें पराजित होते हैं। इसकी आदत पड़ जाने पर जुआरी अपनी जमीन जायदाद को भी दाव पर लगाकर सब कुछ नष्ट करके बर्बाद हो जाता है।

तीसरा व्यसन व्यभिचार है। व्यभिचार का अर्थ है पराई स्त्री के साथ शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करना। यह भी एक सामाजिक बुराई है। समाज में यह कार्य छिपकर के किया जाता है। लोगों को यह भय रहता है कि कहीं कोई इस कृत्य को देख न लें। धीरे–धीरे लोग इस कार्य के आदि हो जाते हैं और खुलेआम इस व्यसन में पड़ जाते हैं। इससे उनका जीवन बर्बाद हो जाता है और अनेक प्रकार के शारीरिक रोग से वह रूग्ण हो जाता है और एक दिन ऐसा आता है कि उसकी मृत्यु ही हो जाती है।

चौथा व्यसन मद्यपान है। मद्यपान की आदत बहुत बुरी है। शराब पीकर शराबी सड़क पर, नाली में अथवा जहां कहीं भी गिरे हुए दिखाई देते हैं। शराबी को अपनी पत्नी मॉ और बहन में कोई अन्तर नहीं दिखता। वह अनाप–शनाप बोलता रहता है। दूसरों को गाली देता है। ऐसे व्यक्ति समाज के लिए कलंक हैं। पांचवा व्यसन है शिकार खेलना। शिकार करना भारत की प्राचीन परम्परा थी। प्राचीनकाल में राजा लोग शिकार पर जाया करते थे। यह उनके आनन्द के लिए होता था। महाराज दशरथ ने श्रवण कुमार को शिकार समझकर बाण से मारा था जिससे उनकी मृत्यु हो गयी। जब महाराज दशरथ ने यह देखा कि यह शिकार नहीं बल्कि मनुष्य है तो उन्हें बहुत दुःख हुआ। परिणाम स्वरूप श्रवण कुमार के माता–पिता को श्राप दिया। जिससे तड़प–तड़पकर उनकी मृत्यु हुई।

छठा व्यसन है निन्दा करना। कुछ लोगों की आदत होती है कि वे एक–दूसरे की चुगली करते रहते हैं। परस्पर लड़ाते रहते हैं। यह एक बुरी आदत है। इसमें उनका कोई लाभ हो गया न हो किन्तु दूसरों की हानि होती है। सातवां व्यसन है परस्त्री गमन। भारतीय संस्कृति में स्वदार संतोष की व्यवस्था है। इसी व्यवस्था की पूर्ति के लिए विवाह संस्कार है। अपनी स्त्री के साथ ही मनुष्य को संतुष्ट रहना चाहिए। परायी स्त्री में मातृत्व भाव होना चाहिए।

सप्त व्यसनों के कारण समाज में बुराइयां फेलती हैं। आज लोगों में अनेक बीमारियां फैल रही है। भागदौड़ भरी जिन्दगी में शान्ति नहीं मिल रही है। मानव तनावग्रस्त है। तनाव से पीड़ित होने के कारण मानव की दुर्गति हो रही है। मानव क्लेशों से तप रहा है। मानव अप्राकृतिक हो गया है। प्राचीनकाल में मनुष्य के पास साधन नहीं थे फिर भी वह संतुष्ट था और प्रसन्नतापूर्वक रहता था। आज व्यक्ति ने अपनी आवश्यकताएं इतनी बढ़ा लीं है कि उसकी पूर्ति करने में वह रातों–दिन लगा रहता है। इसी के कारण उसे कष्टानुभूति होती है।

आवश्यकताओं को सीमित करने से मानव प्रसन्नचित रह सकता है। आज समाज में असहनशीलता बढ़ रही है। परिवार, समाज हर जगह यह भाव दिखाई दे रहा है। व्यक्ति स्वकेन्द्रित और स्वार्थी हो गया है। अहंकार की भावना बढ़ रही है जिसके कारण कष्ट भी बढ़ रहा है। त्याग की भावना नष्ट होती जा रही है। मानव इतना स्वकेन्द्रित हो गया है कि वह

केवल अपनी पत्नी और बच्चों को ही देखता है। परिवार के अन्य सदस्यों की क्या स्थिति है वह देखते हुए भी नहीं देखता। प्राचीनकाल में परिवार में समविभाग होता था। किन्तु आज यह नहीं हो रहा है। पहले व्यक्ति प्रधान था वहां धन कोई महत्व नहीं रखता था, किन्तु आज धन प्रधान हो गया है व्यक्ति गोण हो गया है। इसलिए धन कमाने की प्रतिस्पर्धा बढ़ गयी है जिससे तनाव भी बढ़ रहा है। कष्टों को सहन करना, दुःखों को सहन करना, प्रतिकूल परिस्थितियों को सहन करना और परीषहों को सहन करना कष्ट सहिष्णुता है। व्यसन समाज या राष्ट्र को घुन की तरह नष्ट कर देता है। जिस समाज में व्यसन व्याप्त हो जाये वह समाज स्वयं ही मृत प्राय हो जाता है।